सवैये

भाग – 2/4

रसखान

सवैये

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवौ निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं॥

रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

सवैये

शब्दार्थ :

लकुटी – लाठी
या – इस
तिहूँ – तीनों
पुर – नगर
सौं – से
धाम – भवन
तड़ाग – तालाब
तजि डारौं - छोड़ दूँ
करील – एक प्रकार का वृक्ष

निहारौं – देखता हूँ
कोटिक – करोड़ों
कलधौत – सोना
कबौं – जब से
बिसारौं – भूलूँ
कुंज – लता
वारौं – न्योछावर
कामरिया – छोटा कम्बल
नवौ निधि – नौ निधियाँ

सवैये

ब्रज के वन

करील की झाड़ियाँ

कलधौत (सोने का महल)